"हुक्म"

- बिन सतिगुर किने न पाइओ - कर वेखहु मन वीचार ।
मनमुख मैल न उतरे - जिचर गुर सबद न करे पिआर ।
- सतसंगति कैसी जाणीऐ । जिथै एको नाम वखाणीऐ ।
एको नाम हुकम है - नानक सतिगुर दीआ बुझाइ जीउ ।
- हुकमी होवन आकार - हुकम न कहिआ जाई । हुकमी होवन जीअ - हुकम मिले वडिआई । हुकमी उतम नीच - हुकम लिख दुख-सुख पाईअह । इकना हुकमी

- बखसीस - इक हुकमी सदा भवाईअह । हुकमे अंदर सभु को - बाहर हुकम न कोइ । नानक हुकमे जे बुझे त - हउमै कहै न कोइ ।
- इहु जग सचे की है कोठड़ी - सचे का विच वास । इकन्हा हुकम समाइ लए - इकन्हा हुकमे करे विणास ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

गुरू साहब बता रहे हैं कि हम सृष्टि में नजर मार देखें कि चाँद, सूरज और पृथ्वी दिन-रात सब हुक्म में अपने आप बँधे हैं यानि कि उस परमात्मा की सेवा में दिन-रात लगे हैं और उसका हुक्म निभा रहे हैं अगर एक दिन भी सूरज न निकले या पृथ्वी चक्कर लगाना बंद कर दे तो क्या होगा ।

गुरू साहब समझाते हैं कि इस सृष्टि में उस परमात्मा का हुक्म मौजूद है, रूह से हुक्म निकल जाता है तो क्या होता है वह बदबू (शरीर) मारने लग जाती है हम उसे फिर घर नहीं रख सकते। रूह के अन्दर पाँच तत्त मौजूद हैं । क्या आप इन तत्तों को इकट्ठा कर सकते हैं । यह सब उस गुरू की ताकत है उस परमात्मा का चमत्कार ही है । हम हुक्म का वर्णन नहीं कर सकते

। सिर्फ आत्मा ही इसका बोध कर सकती है क्योंकि आत्मा-परमात्मा का अंश उस समुंद्र की बूंद है जो उससे अलग हो गई है और ८५ लाख योनि में फंसी है । हुक्म का बोध करवाने के लिए गुरू की जरूरत पड़ती है उस नाम की जरूरत पड़ती है जिसके द्वारा हम अन्दर पहुँच सकते हैं और अन्दर तभी पहुँच सकते हैं जब हम संसारिक क्रिया-कलापों व क्लेशों को भूल कर सच की राह पर चलते हैं गुरू के बताये हुए रास्ते पर चलते हैं । हमें अपनी हस्ती को मिटाना है गुरू की सेवा में गुरू के बचनों पर कुर्बान होना है । विकारों को छोड़ना है । अमीरी-गरीबी को छोड़ कर उस सतगुरू की शरण में जाना है और गुरू के बचनों को मानना है । जब सत्संग सुनने जाते हैं जितनी देर सत्संग में रहते हैं गुरू का ध्यान रहता है गुरू के बताये बचन याद रहते हैं । जीवन-मरण के ज्ञान के बारे में पता चलता है कि हम किस तरह इस काल की नगरी में फंसे हुऐ हैं और जब सत्संग समाप्त होता है तो सब कुछ पहले की तरह हो जाता है । अगले सत्संग तक सब कुछ भूल सा जाता है । संत सचखण्ड से आते हैं हक का नारा लगाते हैं वह रूह को अपने साथ मिलाने का रास्ता बनाते हैं जिससे आत्मा और गुरू का मेल हो जाए । गुरू रूह को इस जाल से निकालने के लिए उसे चार अक्षर या पाँच अक्षर दे देता है - (नाम) ताकि रूह भटकती न रहे । गुरू साहब समझाते

हैं कि अगर आप चैकड़ी नहीं लगा सकते या आप से सुबह नहीं उठा जा सकता तो कोई बात नहीं कम से कम सच तो बोल सकते हैं । गुरू जी कहते हैं कि हम तुम्हें सतनाम की गोद में बिठायेंगे । गुरू साहब कहते हैं कि जो बेटा सच बोलेगा उसकी जिम्मेदारी हमारी है हम उसके साथ हैं जो हमारे साथ है या हमारे बचनों को मानता है वह कहते हैं कि हुकम, बचन और सच शब्द का मेल है । वह कहते हैं कि जो हमारा बेटा सात समुंद्र पार बैठ कर हमारे बचनों को मानता है और सच की राह पर चलता है तो हम उसे सात समुंद्र पार भी लेने जाएगें क्योंकि वह हमारा बेटा है । गुरू साहब कहते हैं कि बेटा हुकम क्या है सुख के आगे अगर काले बादल आ जाने से वह अपना काम करना नहीं बंद कर देता आप उसकी ओर देखेंगें तो वह उसी तरह चक्कर काट रहा है । वह अपने गुरू के हुकम में है, गुरू साहब कहते हैं यह बदली कर्मों की है यह बेटे हमने साफ करनी है और बनने नहीं देनी । जो कर्मों का भुगतान है वह सतगुरू के रास्ते पर चल कर पूरा करना है। गुरू के पास पल-पल का हिसाब है वह जब चाहे रोक लगा सकते हैं इस सृष्टि को मिटा सकते हैं लेकिन गुरू हर युग में रूहों को ले जाने के लिए आते हैं और आते रहेगें । जीव गुरू पर यकीन नहीं करते वह काल की नगरी में मनमुख बनकर

जी रहे हैं, आज के साथ आगे की चिंता करते हैं और संसारिक क्रिया-कलापों में खोए रहते हैं ।

"एको नाम हुकम है नानक सतिगुर दीआ बुझाइ जीउ ।"

गुरू साहब कहते हैं हुकम ही नाम का रूप है । सतगुरू के बचनों पर चले बिना नाम की भक्ति नहीं हो सकती क्योंकि नाम ही सतगुरू है, वह ही परमात्मा है । आप सतगुरू के बताए हुए रास्ते के बिना अन्दर उस धुन व प्रकाश को प्राप्त नहीं कर सकते । गुरबाणी रूहबरूह स्पष्ट करती है । सतिगुर के हुकम में आये बिना परमात्मा की प्राप्ति या अन्दर नहीं पहुँचा जा सकता । सतगुर समझाते हैं यह उस परमात्मा से मिलने का रास्ता है जिस पर जीव चल सकता है । हुकम ही सृष्टि को चला रहा है और हुकम ही सृष्टि का संहार कर रहा है, प्रलय हुकम से होनी है । जब धरती पर जीवों द्वारा अधर्म फैलेगा तब उस परमात्मा के हुकम से ही प्रलय होनी है । एक बच्चा स्कूल जाता है, रोज अपनी हाजरी लगाता है और मास्टर जी की बात सुनता है और मास्टर जी के हुऐ सबक को याद करता है यह ही नहीं बल्कि पुस्तकों को अपनी छाती से लगाता है यही हुकम है कि बच्चा किस प्रकार स्कूल से घर तक अपने मास्टर जी के हुकम में बंधा है । गुरू साहब कहते हैं कि हम फरियाद लेकर गुरू साहब के पास जाते हैं गुरू साहब सब बातें सुनते हैं और कह देते हैं कि

बेटा भजन किया कर, रहमत करेंगें सब ठीक हो जायेगा । हम यह तो समझ जाते हैं कि गुरू जी ने कहा है रहमत करेंगें सब ठीक हो जायेगा, पर यह भूल जाते हैं कि भजन के लिए कहा है वह रहमत कैसे पूरी होगी जब आप 75% भी रास्ता नहीं तय करोगे तो कैसे गुरू का हुकम पूरा होगा । गुरू साहब कहते हैं कि गुरू 100% है, 75% ताकत काल की है जिसने आपको अपने शिकंजे में घेर रखा है और 25% कटौती गुरू ने दे रखी है और जीवात्मा इससे बाहर नहीं निकल पा रही । गुरू साहब कहते हैं कि जीव को हुकम में आने के लिए गुरू की जरूरत रहती है जिससे वह 25% से 125% हो जाती है । यानि कि एक बार लगन लग गई और गुरू के दर्शन हो गये तो समझो रहमत हो गई ।

गुरू साहब कह रहे हैं कि काल और दयाल की लड़ाई है जीत उसकी होनी है जिसने दयाल के रास्ते पर चलना है । गुरू साहब कहते हैं हम काल के आगे नाक रगड़ रहे हैं । मकड़ी का उदाहरण देते हुऐ समझाते हैं कि जिस प्रकार मकड़ी अपना जाल बुनती है और उसमें फंस कर मर जाती है हम भी अपना जाल खुद बुन रहे हैं जिसमें खुद ही फंस कर हमने मर जाना है और बार-बार जन्म लेने है । गुरू साहब कहते हैं अपने आप को पहचानों गुरूमुखी बनो, मनमुखी बनकर न रह जाओ । उदाहरण देते हैं:-

दो बच्चे स्कूल जा रहे हैं और लेट हो रहे हैं, डर है मास्टर जी नाराज होगें मार पड़ सकती है दोनों में से एक वहीं बैठ जाता है और गुरू का नाम लेने लगता है और दूसरा बच्चा बस्ते को सिर पर रख कर गुरू का नाम और गुरू की सुरत का ध्यान करते हुऐ भागना शुरू कर देता है, पहुँचना तो उसी ने है जिसने मेहनत करनी है जिसने उद्यम करना है और गुरू के बचनों को मानना है । गुरू साहब बताते हैं कि जीव तूं गुरू का मुख बन जा तुझे सतनाम की गोद में ही सच्चा सुख प्राप्त होगा, त्रिकुटी और ब्रहम में सुख नहीं है यह तो माया और मन का जाल है, जब मच्छी काटे को देख नहीं सकती उसे तो सिर्फ उसमें लगा हुआ अन्न ही दिखाई देता है जब वह उसे खाने जाती है और फिर उसमें ही फंस जाती है तब उसे बाहर निकल कर कट कर तला जाना है । ऐसे ही रूह को भी नरकों में बालों से पकड़ कर तेल के गरम-गरम कड़ाहों में डाल दिया जाता है क्योंकि जीव विकारों व क्रिया-कलापों में फंसा हुआ है । गुरू साहब कहते हैं जीव को शब्द में लीन होना है उस परमात्मा में लीन होना है और हम 84 लाख योनि में फंसे बैठे हैं । 75% बोने के लिये हमें वापिस आना पड़ता है क्योंकि जैसा बोओगे वैसा ही काटोगे । गुरू साहब ने "हक" का नारा लगाया है, उन्होने अपने खेतों में शब्द की और सच की फसल को बोया है सच को मानो, गुरू के बचनों को

मानो, गुरू को पहचानो, परमात्मा से गुरू से प्रेम करो, बिना प्रेम आप किसी को प्राप्त नहीं कर सकते ।

सरदार बहादुर जगत जी ने कहा है अगर एक अन्न का दाना भी आपके पास के खेत से उड़ कर आपके खेत में आ गया तो भी आपको उसका हिसाब चुकाना पड़ेगा । जबकि कसूर किसका "हवा का" । काल की नगरी में बिना हिसाब किताब साफ किये आप नहीं जा सकते, यहाँ तो संत महात्माओं को भी हिसाब देकर जाना पड़ता है ।

गुरू साहब कहते हैं कि गुरू में 16 सूरज प्रगट हैं "कबीर साहब" कहते हैं कि अगर मैं चाहूँ तो इस संसार के सारे जीवों को अपने साथ सचखण्ड ले जा सकता हूँ लेकिन मैं ऐसा नहीं करना चाहता क्योंकि जो जीव जिस अवस्था में रह रहा है वह उसी में ही खुश है उसे सचखण्ड से क्या लेना । जीवात्मा जब गुरू के बचनों पर चल पड़ती है तो शिष्य और गुरू में फर्क नहीं रह जाता, शिष्य गुरू का रूप हो जाता है और उसमें सोझी आ जाती है गुरू ही शिष्य को अपने सिर पर बिठा कर सचखण्ड तक ले जाते हैं । जन्म से लेकर आखिरी सांस तक वह गुरू के हुकम में रहता है, जो जीव गुरू को पहचान लेता है, और गुरू के बताये हुऐ रास्ते पर चल पड़ता है वह कभी भी मार नहीं खा सकता । उसे जब गुरू मिल जाए जो कि हर पल उसके साथ रहता है

उसका हर वक्त ध्यान रखता है, तो उसे किस बात का डर है वह गुरू का शिष्य है गुरू का प्यारा है ।